चौथे दादा गुरुदेव की चौथी स्वर्ग शताब्दी मनाई गई

पालीताणा, 21 सितम्बर

जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ के उपाध्याय प्रवर पूज्य गुरूदेव मरूधर मणि श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में आज श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि की चौथी शताब्दी का भव्य आयोजन किया गया।

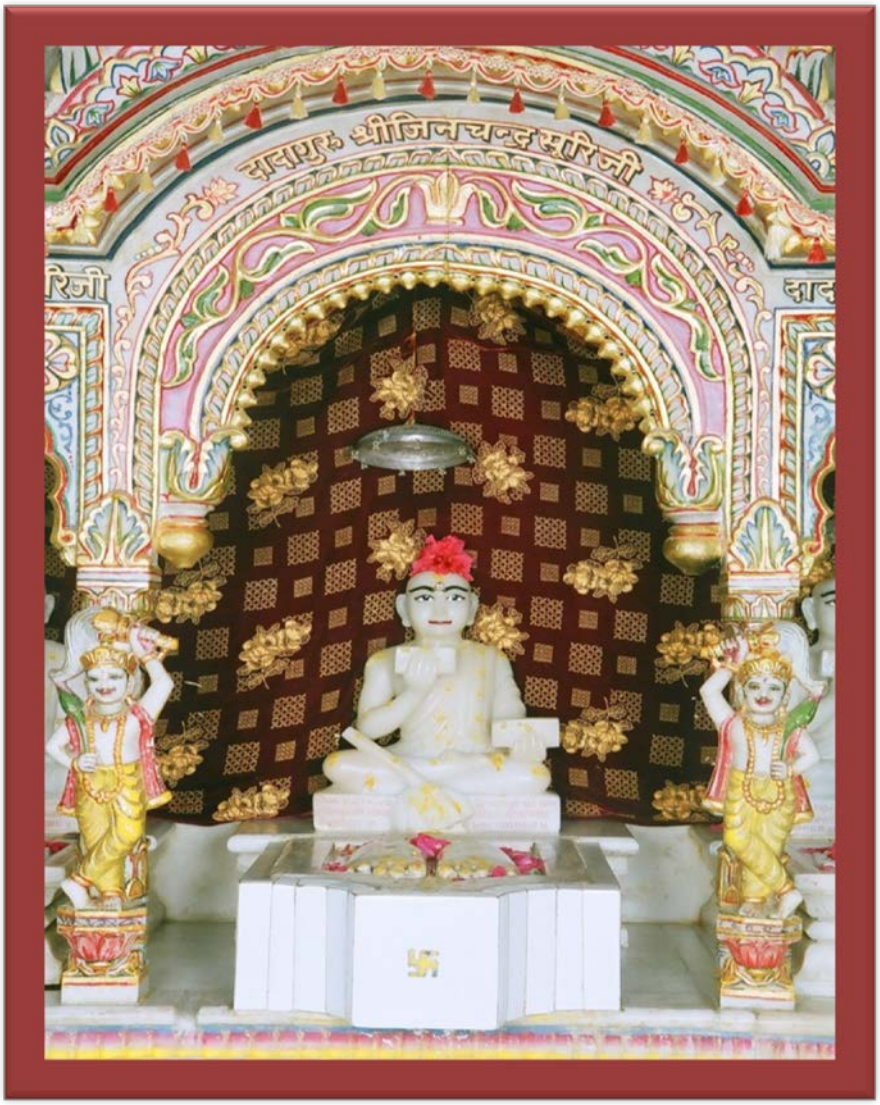

इस अवसर पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा- जिन शासन के इतिहास में केवल चार दादा गुरुदेव हुए हैं। जिन्होंने अपने संयम, त्याग, तप और आराधना साधना के बल पर जिन शासन की महती प्रभावना की। उनमें प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि इतिहास के उज्ज्वल नक्षत्र हैं, जिन्होंने हजारों गोत्रों की स्थापना करके जिन शासन को पूर्ण रूप से समृद्ध बनाया। उनके महाचमत्कारी चरण अहमदाबाद में

दादा साहेब ना पगला में बिराजमान है। उनके चरणों से ही वह पूरा क्षेत्र दादा साहेब ना पगला के नाम से सुप्रसिद्ध हैं। जहाँ हर सोमवार को हजारों श्रद्धालु दर्शन करके अपने जीवन को धन्य बनाते हैं।

उनकी पावन परम्परा में चौथे दादा गुरुदेव हुए। उनका समय सोलहवीं व सतरहवीं शताब्दी का संधिकाल था। मात्र नौ वर्ष की उम्र में दीक्षा ग्रहण करके मात्र सतरह वर्ष की उम्र में आचार्य बन कर संपूर्ण खरतरगच्छ के अधिपति बने।

उनके जीवन का सबसे महान् कार्य था- संयम की सुरक्षा करना। उस समय यतियों का शिथिलाचारियों का बोलबाला बढ गया था। उन्होंने अपनी निश्रा के समस्त यतियों को साधु होने के लिये प्रेरित किया। और आदेश दिया कि यदि साधु नहीं बन सको तो गृहस्थ हो जाओ। मगर यति की श्रेणि नहीं रहेगी।

वे दृढ क्रियापात्र आचार्य थे। उन्होंने अपने ज्ञान व साधना के बल पर सम्राट् अकबर को प्रतिबोध देकर उसे अहिंसक बनाया। सम्राट् अकबर के जीवन पर उनका अनूठा प्रभाव था। इस बात का पूरा वर्णन आइने अकबरी में साहित्यकार अबुल फजल ने किया है।

उन्होंने कहा- दादा गुरुदेव का पूरा जीवन साधना का प्रतिबिम्ब था। उन्होंने अपने जीवन में सैंकडों साधुओं को दीक्षा प्रदान की। और हजारों हजारों लोगों को मद्य मांस व जूआ आदि विकृतियों से छुडाकर सच्चा जैन सच्चा मानव बनाया था।

समारोह का संचालन करते हुए मुनि श्री मनितप्रभसागरजी ने दादा गुरुदेव की अमृतमयी परम्परा की विवेचना की। उन्होंने कहा- परमात्मा महावीर का शासन अक्षुण्ण रूप से चल रहा है, यह उन्हीं आचार्य भगवंतों की कृपा का परिणाम है।

इस अवसर पर साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी, साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी, साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी, साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी, साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी आदि ने अपने विचारों द्वारा दादा गुरुदेव की महिमा का वर्णन प्रस्तुत किया।

दोपहर में दादा गुरुदेव की बडी पूजा पढाई गई।

आयोजक श्री रायचंद दायमा ने उपधान के तपस्वियों की कुशलक्षेम पूछी।

प्रेषक

दिलीप दायमा